प्रेस विज्ञप्ति

थैलेसीमिया एक अनुवांशिक रोग है इकसा मुख्य कारण रक्तदोष होता है। यह बीमारी बच्चों को अधिकतर ग्रसित करती है तथा उचित समय पर उपचार न होने से बच्चो की मृत्यु तक हो सकती है। इस बीमारी के शिकार बच्चो में रोग के लक्षण जन्म के चार से छः महीने मे नजर आने लगते है। इस बीमारी से ग्रसित बच्चे को बचाने के लिए औसतन तीन सप्ताह में एक बोतल खुन चढ़ाना अनिवार्य हो जाता है। आज दिनांक 23 सितम्बर, 2017 को कलॉम सेण्टर में एक वार्षिक थैलेसीमिया अपडेट का शुभारम्भ मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट के कर कमलो के द्वारा किया गया। जिसमें के0जी0एम0यू0 के पैथोलॉजी विभाग, क्लीनिकल विभाग, बालरोग विभाग, साइटोजेनीटिक्स विभाग, सेण्टर फार एडवांस रिसर्च और थैलेसीमिया इण्डिया सोसाईटी लखनऊ ने एनुअल थैलेसिमिया अपडेट 2017 का आयोजन किया इसमें डॉ0 वी0पी0 चौधरी कंसल्टेन्ट फोर्टिस हॉस्पिटल फरीदाबाद द्वारा थैलेसिमिया के बारे में बताया कि थैलेसिमिया एक अनुवांशिक बीमारी है जो माता–पिता से बच्चों मे एक जीन के माध्यम से जाती है। 5 करोड़ लोगो में थैलेसिमिया का जीन मौजूद है। भारत में पंजाबी, गुजराती, महाराष्ट्रियन और सिन्धीयों मे प्रत्येक पांच व्यक्तियों में से एक मे यह जीन पाया जाता है। सबसे ज्यादा यह जीन पाकिस्तान से आने वाले व्यक्तियों मे पाया जाता है। जिन माता पिता में थैलेसीमिया माइनर रूप में है उनके बच्चों मे मेजर थैलिसीमिया होने का खतरा 25 प्रतिशत रहता है। थैलेसिमिया से ग्रसित बच्चों का अगर उपचार न किया जाए तो तीन साल की उम्र तक उनकी मृत्यु हो जाती है। मेजर थैलिसिमिया से पीड़ित बच्चो को दो से तीन सप्ताह में एक बार खुन चढ़ाने की अवश्यकता पड़ती है। कार्यशला में डॉ0 अमिता पाण्डेय, डॉ0 निशांत वर्मा ने थैलेसिमिया के मैनजमेण्ट के बारे में बताते हुए कहा कि जो बच्चे थैलेसीमिया से पीड़ित है उनको बार बार खुन चढ़ाने की वजह से उनमे आयरन की मात्रा अधिक होने लगती है जिसकी वजह से उनके शरीर के अन्य अंग जैसे हार्ट, लिवर इत्यादि अंगो पर आयरन का दबाव बढ़ने से वो खराब होने लगते है। इसलिए थेलेसीमिया से पीड़ित ऐसे बच्चे जीनको बार बार खुन चढ़ाने की जरूरत होती है उन्हे शरीर से आयरन निकालने की दवा को भी दिया जाता है।

(प्रो0 नरसिंह वर्मा)
संकाय प्रभारी, मीडिया सेल
चिकित्सा संकाय, के0जी0एम0यू0

(प्रो0 विभा सिंह)
संकाय प्रभारी, मीडिया सेल
दंत संकाय के0जी0एम0यू0